1

क्रांतिक मसीहियत ... धनी जवान हाकिम से जिस धर्म की मांग की गई

(मत्ती 19:16-22)

बदला हुआ जीवन समर्पण का जीवन है ...।

यदि कोई ऐसा विशेषण है जिसे हम में से अधिकतर लोग अपने ऊपर लागू नहीं करना चाहेंगे वह सम्भवतया ''क्रांतिक'' है। धर्म के विषय में क्रांतिक होना सिलवटों वाला सूट, बिखरे हुए बाल, कमीज़ पर दाग, गंदे जूते पहने कोने में खड़े अपनी बाइबल पर हाथ मार-मार कर चिल्लाते हुए एक बूढ़े व्यक्ति की कल्पना है कि ''मन फिराओ नहीं तो बर्बाद हो जाओगे!'' हम ऐसे नहीं बनना चाहते!

परन्तु असल सवाल यह है कि प्रभु हम से क्या चाहता है? क्या प्रभु हम से ''क्रांतिक'' होना चाहता है?

इस प्रश्न को परिप्रेक्ष्य में रखने के लिए, मैं आप को एक सच्चे अनुभव की बात बताता हूं। कई साल तक हमने विदेश के एक देश में मिशन क्षेत्र में एक मण्डली के साथ काम किया। हमारे उस काम को छोड़ने के लिए कुछ देर बाद, एक लहर जिसमें हमें एक विशेष प्रकार के पूर्ण समर्पण की आवश्यकता होती है कि अमेरिकी प्रचारकों ने उस बिल्डिंग से लगभग चार मील दूर जहां वह मण्डली इकट्ठा होती थी एक मण्डली आरम्भ कर दी। इस लहर के लोगों को क्रांतिक कहा जाता है। चाहे वे कुछ बातें जिन्हें वे सिखाते और करते हैं बाइबल के अनुसार आपत्तिजनक हैं, परन्तु कम से कम कहें तो हर कोई इस बात पर सहमत है कि उनमें आत्माओं को जीतने का बड़ा जनून है। हम उनके इस आदेश से असहमत हो सकते हैं कि पूर्ण समर्पण के लिए क्या आवश्यक है, परन्तु क्या हमें पूर्ण, क्रांतिक समर्पण से सहमत होना चाहिए? इससे भी आवश्यक है कि क्या हम अपने सदस्यों से उतने ही पूर्ण समर्पण को कहने के लिए तैयार नहीं हैं?

यह प्रश्न मेरे मन में तब आया था जब वह मण्डली आरम्भ हुई थी जो उस कलीसिया से अधिक दूर नहीं थी जिसके साथ हमने काम किया था। जिन लोगों को हमने प्रभु में लाया था हमने उन्हें उनकी जिम्मेदारी बताई थी कि वे संगति करें, चन्दा दें, विश्वासी बने रहें और दूसरों को प्रभु में लाएं। काफ़ी हद तक हम सफल रहे हैं। जैसा कि अधिकतर मण्डलियों में होता है हमारे भाइयों में से कुछ लोग बहुत विश्वासी हैं, कुछ काफ़ी विश्वासी हैं और कुछ तो ज़रा भी विश्वासी नहीं हैं।

जब नई मण्डली आरम्भ हुई थी, तो ''हमारे सदस्यों'' में से कुछ लोग उस में गए थे। कइयों ने तो वहां सदस्यता लेने में दिलचस्पी भी दिखाई थी। परन्तु इसके प्रचारकों ने उन भावी

सदस्यों को स्पष्ट कर दिया कि ''उनकी मण्डली'' के *हर* सदस्य से रविवार प्रातः की आराधना में उपस्थित होने तथा सप्ताह भर के पारिवारिक बाइबल अध्ययनों में कम से कम दो बार भाग लेने की अपेक्षा की जाती है और *हर* सदस्य से एक आत्मा को जीतने और किसी को थोड़े समय के बीच ही दूसरों को प्रभु में लाने की उम्मीद की जाती है।

जानते हैं कि फिर क्या हुआ? ''हमारे सदस्यों'' ने तुरन्त निर्णय लिया कि वे उस में कोई योगदान नहीं देना चाहते और वे ''हमारी'' मण्डली में लौट आए ... जहां वे सप्ताह में केवल एक बार ... या बिल्कुल नहीं आ सकते थे ... जहां उन्हें किसी खोए हुए को बचाने के लिए कुछ न करने के बावजूद ''अच्छी तरह से'' सदस्य माना जा सकता था।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि हम में से जिन लोगों ने उस मण्डली के साथ काम किया था, उन्हें कैसा लगा? मिली जुली भावनाओं की बात करें! एक ओर तो हम प्रसन्न थे कि ''हमारे सदस्य'' इस नये समूह में नहीं ''खोए,'' जिसकी शिक्षा और व्यवहार संदेहास्पद था परन्तु दूसरी ओर हम चकित थे कि इन सब वर्षों में हमने इन लोगों को क्या सिखाया? क्या हमने उन्हें यह सिखाया कि नीम गर्म होना कोई बड़ी बात नहीं है? कि यदि आप सचमुच में मसीह को समर्पित नहीं हैं तो चिन्ता वाली कोई बात नहीं है? कि आप वफ़ादारी से आराधना में आएं या न, उदारता से दें या न, दूसरों को सिखाएं या न, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यदि हमने उन्हें यह नहीं सिखाया कि मसीहियत के लिए आधा मन होना कोई बड़ी बात नहीं है, तो उन्हें कैसे पता चला? क्या हमने उन्हें सिखाया? क्या हमने कोई गलती की कि जिस कलीसिया को आरम्भ करने में हमने सहायता की उसे बाल अवस्था में सिखाया और किशोरावस्था में उसकी अगुआई की, में ऐसे सदस्य होंगे, जिनके लिए ''पूर्ण समर्पण'' का विचार बाहरी और/या धर्म बहिष्कृत होगा?

परन्तु मेरा मानना है कि जो बात उस मण्डली में लागू होती थी वही अन्य हज़ारों मण्डलियों पर लागू होती है। इस मण्डली पर लागू होती है? मान लें कि एक रविवार की सुबह हमने घोषणा की कि (क) सप्ताह में चार बार उपस्थिति (जब तक बहुत मजबूरी न हो), (ख) उदारता से देना, (ग) शुद्ध नैतिक जीवन और (घ) दूसरों को मसीह में लाने के सच्चे प्रयास की कम से कम ये बातें आवश्यक हैं। क्योंकि आपकी मांग इस कलीसिया के सदस्य के रूप में नहीं है। कितने लोग कहेंगे, ''अलविदा,'' और कोई दूसरी कलीसिया ढूंढ़ेंगे?

शायद आप सोच रहे हैं: ''मैं यही करूंगा: मैं छोड़ दूंगा और छोड़कर सही ठहरूंगा क्योंकि आपको इस प्रकार के नियम बनाने का कोई अधिकार नहीं है।'' आप सही हो सकते हैं। परन्तु एक और सवाल है कि मसीह का चेला होने की बुलाहट के लिए कम से कम शर्तों को पूरा करते हुए अपनी पूरी कोशिश किए बिना ऐसे काम करके *आपको* मसीही कहलाने का अधिकार है? क्या मसीह आप से उसका कट्टर समर्पित होने को कहता है? इस प्रश्न के उत्तर के लिए, आइए मत्ती 19:16-22 में दी गई धनी जवान हाकिम की कहानी पढ़ते हैं।

इस कहानी से कई सच्चाइयां जानी जा सकती हैं। वे बातें जिनके लिए लोग जीते हैं, उद्धार नहीं देतीं।

वे बातें जिन पर मनुष्य जीवित रहता है, उद्धार नहीं दिलातीं

ऐसी बहुत सी अच्छी बातें हैं जो आप इस व्यक्ति के विषय में कह सकते हैं। (1) वह

जवान था (मत्ती 19:22)। (2) वह एक हाकिम था (लूका 18:18)। (3) वह धनवान था (मत्ती 19:22; लूका 18:23)। (4) यदि उसके वचन को मान लेता, और न मानने का कोई कारण नहीं है क्योंकि वह एक भला आदमी था परन्तु फिर भी वह आज्ञाओं को मानना था (मत्ती 19:18-20)। (5) उसकी दिलचस्पी बचाए जाने में थी (मत्ती 19:16)। (6) उसे मालूम था कि अनन्त जीवन पाने के ढंग की जानकारी लेने वह कहां जा रहा था: उद्धार के कर्त्ता यीशु के पास। (7) उद्धार पाने का ढंग जानने को वह इतना उत्सुक था, मरकुस हमें बताता है कि वह यीशु के पास भागकर गया और उसके आगे घुटने टेक दिए (मरकुस 10:17)। (8) वह यीशु के व्यवहार तथा व्यक्तित्व के बारे में कुछ जानता था, क्योंकि उसने यीशु के सामने घुटनों के बल होकर उसे ''उत्तम गुरु'' कहा (मरकुस 10:17)। (9) यीशु ने उससे प्रेम किया (मरकुस 10:21)।

इस सब के बावजूद उसे उद्धार अभी तक नहीं मिला था! वह यीशु से यह पूछने के लिए आया कि अनन्त जीवन पाने के लिए वह क्या करे। यीशु ने यह नहीं कहा: ''इसकी चिंता मत कर: तेरे पास तो यह पहले से है।'' *उसके धन ने उसका उद्धार नहीं किया।* यीशु के चेलों सहित इस तथ्य ने यहूदियों को चकित किया होगा (मत्ती 19:25)। उनके लिए उस आदमी के धनवान होने का मतलब यही था कि वह धर्मी है। यह उनकी समझ से बाहर था कि कोई धनवान खोया हुआ हो सकता है। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि धनवान होने का अर्थ आवश्यक नहीं कि यह हो कि उस व्यक्ति का उद्धार हो गया है। *न उसकी शक्ति या प्रतिष्ठा उसे उद्धार दिला सकी।* वह अपने समकालीन लोगों में एक बड़ा आदमी होगा। परन्तु फिर भी उसका उद्धार नहीं हुआ था। यही बात आप पर लागू हो सकती है। *न उसकी जवानी ने उसका उद्धार किया।* जब कोई जवान व्यक्ति परमेश्वर को भाने का ढंग जानना चाहे तो यह बड़ी बात होती है। परन्तु जवान होना इस बात की गारन्टी नहीं है कि आप उसे भा रहे हैं।

न उसकी भलाई ने उसका उद्धार किया। यीशु ने उससे कहा ''आज्ञाओं को माना कर।'' यीशु ने उन शर्तों में उत्तर क्यों दिया? क्योंकि वह धनवान जवान हाकिम मूसा की व्यवस्था के अधीन रहता था। यीशु के लिए उसका ध्यान इस ओर लगाना न्यायसंगत था कि सबसे पहले उसे उस व्यवस्था को मानने का ध्यान करना चाहिए जिसके अधीन वह रहता था। जवान व्यक्ति ने पूछा, ''कौन सी आज्ञाएं?'' (मत्ती 19:18)। यीशु ने मूसा की व्यवस्था की आज्ञाओं का एक नमूना दिया जिसे उस आदमी को मानना था। फिर जवान आदमी ने कहा, ''हे गुरु, इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूं'' (मरकुस 10:20)। हम मान सकते हैं कि मुख्यतया (आवश्यक नहीं कि पूर्ण रूप से), वास्तव में वह इन्हें मानता था। फिर उसने पूछा, ''अब मुझ में किस बात की घटी है?'' (मत्ती 19:20)। यीशु ने यह उत्तर नहीं दिया कि ''और कुछ करने की आवश्यकता नहीं। तू एक भला व्यक्ति है इसलिए परमेश्वर ने तेरा उद्धार पहले ही कर दिया है।'' बल्कि यीशु ने अतिरिक्त निर्देश दिए। उसके लिए अभी भी कुछ करना आवश्यक था, चाहे वह एक भला व्यक्ति ही है। भला होने ने उसका उद्धार नहीं किया!

हम जीवन में जिन बातों को अपना उद्देश्य बना लेते हैं जैसे धन, शक्ति, प्रसिद्धि, जवानी, भलाई, ये हमारे उद्धार की गारन्टी नहीं दे सकते।

यीशु द्वारा की जाने वाली बड़ी मांगें हमेशा प्रेम के कारण ही दी जाती है

इस घटना को लिखते हुए मरकुस कहता है:

> यीशु ने उस पर दृष्टि करके उस से प्रेम किया, और उस से कहा, तुझ में एक बात की घटी है; जा, जो कुछ तेरा है, उसे बेच कर कंगालों को दे, ... और मेरे पीछे हो ले (मरकुस 10:21)।

यीशु ने यह महान बात प्रेम के कारण पूछी; उस जवान हाकिम के करने के लिए वास्तव में यह सबसे बढ़िया बात थी। यीशु यह जानता था और उससे प्रेम करने के कारण उसने उससे ऐसा करने को कहा। यीशु आप से भी प्रेम करता है, इसी लिए वह आपसे उसे सब कुछ देने को कहता है!

धन लोगों को परमेश्वर के राज्य से बाहर रख सकता है

धन आप को उद्धार पाने से दूर ... और स्वर्ग से बाहर रख सकता है। ''अरे नहीं नहीं,'' कोई आपत्ति करता है, ''धन बाहर नहीं रखता बल्कि धन का प्रेम रखता है।'' आपने बिल्कुल सही कहा! समस्या यह है कि हमारे समाज में जो लाभ का भूखा, धन की टोह लेने वाला है, सफलता के पुजारी समाज के लिए धन के प्रेम से दूर रहना कठिन है, चाहे हमारे पास यह हो या न। हम में से कितने लोगों ने वैसे ही प्रतिक्रिया दी होती जैसे जवान हाकिम ने प्रभु द्वारा उससे यही करने को कहा था? और बिल्कुल उसी कारण यानी हम अपने धन से प्रेम करते हैं? हम सब जानते हैं कि धन से प्रेम करना मूर्तिपूजा हो सकता है और मूर्तिपूजा के कारण कई लोग नरक में जाएंगे! क्या आपके साथ ऐसा हो सकता है?

प्रभु हर किसी से वही मांग करता है?

क्या आपको सही लगता है कि प्रभु इस जवान आदमी से हर बात पूछता है? उसने यह क्यों पूछा? ''क्योंकि प्रभु उससे प्रेम करता था'' और वह उस जवान के मन में देख रहा था, जिसमें यीशु देख सकता था कि वह जवान परमेश्वर से प्रेम करने से अधिक अपने धन से प्रेम करता था और उस जवान और उद्धार के बीच उसका धन ही था। प्रश्न: क्या यीशु ने कुछ अधिक ही नहीं मांग लिया? उत्तर: नहीं! यीशु द्वारा उसे बदले में जो कुछ दिया जाना था उस सब के कारण!

परन्तु हम फुर्ती से कह सकते हैं कि यीशु हर किसी से ऐसा नहीं कहता! अरे, हां वह कहता है! इससे मेरा यह मतलब नहीं है कि आपको अपना सब कुछ यानी अपनी कार, अपना घर आदि बेचना और बैंक से अपना सारा पैसा निकालना पड़ेगा। यीशु आपसे वही बात एक अर्थ में कहता है कि वह आपका सब कुछ मांगता है!

वह कहता है कि आपको पूरी तरह से परमेश्वर से प्रेम करना होगा (मत्ती 22:37)। आप को पहले परमेश्वर के राज्य को ढूंढ़ना होगा (मत्ती 6:33)! आप को अपने घर, अपने देश, अपने माता पिता, अपने पति या पत्नी, अपने बच्चों, अपनी ज़मीन, अपने धर्म यहां तक कि अपने जीवन से भी अधिक प्रभु से प्रेम करना होगा (लूका 14:26, 27, 33)! नये नियम के अनुसार मसीही व्यक्ति वह है जो कहता है, ''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न

रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है'' (गलातियों 2:20); यही आदमी कहता है, ''यदि हम जीवित हैं, तो प्रभु के लिए जीवित हैं और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिए मरते हैं; सो हम जीएं या मरें, हम प्रभु ही के हैं'' (रोमियों 14:8); यही आदमी कहता है, ''मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है'' (फिलिप्पियों 1:21)।

यदि ये बातें सही हैं (और हैं भी!), तो क्या प्रभु आपसे उस जवान हाकिम से की गई मांग से कुछ कम मांगता है? हो सकता है कि आप को जो कुछ आपके पास है उसे बेचने की आवश्यकता न हो, परन्तु आप को मसीह के कारण, जो कुछ आपका है वह सब देने के लिए, जिसमें आप भी हैं, हर चीज़ का इस्तेमाल प्रभु के लिए करना होगा! धनवान हाकिम से यीशु ने यही कहा था और वह आपसे और मुझ से भी यही कहता है!

क्या यह क्रांतिक लगता है? हां!

परन्तु आम तौर पर हम क्रांतिक कहलाना नहीं चाहते। जब तक क्रूस गद्दीनुमा, अच्छी तरह से फिट किए, आधुनिक, सजावटी और उच्च श्रेणी के होंगे तब तक हम अपने क्रूस ले जाएंगे। परन्तु हम क्रांतिक न बनें! हमें एक आरामदायक, रूढ़ीवादी, अहानिकर, अच्छा माने जाने वाला, नाव को न हिलाने वाला धर्म ... मसीहियत मिला है जो दीन और विनम्र है ... एक ऐसा विश्वास जो संसार को हिलाता नहीं है, बल्कि ''बहाव के साथ बहने वाला है।'' परन्तु ''क्रांतिक''? नहीं, धन्यवाद!

हम उन लोगों को सुनते हैं जो हर दूसरी सांस लेने पर ''जय मसीह की'' कहते हैं और फुसफुसाते हैं, ''परमेश्वर का धन्यवाद है कि मैं इनमें से किसी के जैसा नहीं हूं।'' हम उन लोगों को देखते हैं जो हर जगह यहां तक कि किराना की दुकान पर भी यीशु की गवाही देते हैं और लोगों से पूछते हैं, ''क्या आपका उद्धार हो गया है?'' और हम मन ही मन उनकी तारीफ़ करते हुए सोचते हैं: ''वे हर किसी के सामने कितने अजीब लगते हैं!'' हम लोगों को बाज़ार में जाते, लोगों के दरवाज़े खटखटाते, लोगों को अपना धर्म ''बेचने'' की कोशिश करते हुए देखते हैं और सोचते हैं, ''कितना मूर्ख है! कितना साधारण है! कितना बुरा है! कितना बेकार है! मैं ऐसा करते हुए मरूंगा नहीं!'' और हम ऐसा करते हुए न तो मरते हैं और न जीते हैं। फिर ऐसे धार्मिक लोग हैं जो किसी शो में नहीं जाएंगे ... विशेष प्रकार के कपड़े नहीं पहनेंगे ... कुछ भी हो जाने पर कलीसिया में जाना बन्द नहीं करेंगे ... उनके साथ कुछ गलत होने पर बदला नहीं लेंगे ... और हमें लगता है, ''कितने क्रांतिक हैं! अच्छा है, मैं उनके जैसा नहीं हूं!''

मेरा प्रश्न है कि मसीह को और आरम्भिक कलीसिया को कौन बेहतर ढंग से प्रस्तुत करता है–जैसी क्रांतिक मसीहियत का विवरण मैं दे रहा हूं ... या आधे मन वाला, सामाजिक तौर पर स्वीकार हम में से अधिकतर का सुविधाजनक धर्म? उत्तर देने के लिए, विचार करें: क्या यीशु क्रांतिक था? क्या वह क्रूस पर आरामदायक, सामाजिक रूप से स्वीकार्य धर्म में जाने को तैयार था? क्या पौलुस क्रांतिक था? क्या लोगों ने उस पर एक बार पागल होने का आरोप नहीं लगाया था क्योंकि वह अपने उद्देश्य और अपने संदेश के प्रति इतना गम्भीर था? (प्रेरितों 26:24)। क्या आरम्भिक कलीसिया क्रांतिक थी? क्या बाइबल यह नहीं कहती कि उन्होंने ''जगत को उलटा पुलटा कर दिया है?'' (प्रेरितों 17:6)। जब यीशु ने उस धनी जवान हाकिम से अपना सब कुछ बेच देने को कहा तो क्या यह एक क्रांतिक मांग नहीं थी? और जब यीशु आपसे कहता है कि

बाकी सब बातों से उसे पहल दो तो क्या यह क्रांतिक नहीं है ? मैं अपना मुकदमा छोड़ देता हूं।

यीशु की क्रांतिक मांगों को मानना हमारे ऊपर है

उस जवान ने यीशु की मांगें स्वीकार नहीं कीं, ''वह जवान यह बात सुन उदास होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था'' (मत्ती 19:22)। यह प्रभु और उसकी कलीसिया के लिए कितनी बड़ी हानि थी! यदि वह जवान बिना शर्त के अपने आपको यीशु को देने को तैयार हो जाता तो वह कितना भला कर सकता था! परन्तु सबसे बड़ी हानि उस जवान आदमी की अपनी थी क्योंकि उसने आशीषित होने (मत्ती 19:21, 29) और प्रभु के लिए उपयोगी होने का अवसर खो दिया। इससे भी महत्वपूर्ण यह कि उसने अनन्त जीवन पाने का अवसर खो दिया। वास्तव में दुखी होने का उसके पास उससे बड़ा कारण था जिसका उसे अहसास नहीं था। जब आज यीशु आपको बुलाए और आपको अपना सब कुछ उसे देने को कहे तो *आपकी* क्या प्रतिक्रिया होगी ? क्या आप पूर्ण समर्पण से उसके पास लौट आएंगे, या आप उस जवान की तरह, दूर चले जाएंगे ? यह सब आप पर है !

सारांश

इस पाठ से मुझे क्या प्राप्त करने की उम्मीद है ? तीन लक्ष्य:

पहला, मैं आपको *विचार करवाने* की उम्मीद रखता हूं: मसीहियत को मानने पर विचार करने की। संसार में (इस संसार सही होगा; क्योंकि स्वर्ग से नहीं मिला) आपको यह विचार कहां से आया कि मसीह आपसे इतनी कम मांग करता है ? आपको यह विचार कहां से मिला कि मसीहियत आरामदायक अहानिकारक, चुनौतीरहित होनी चाहिए। मसीह के धर्म की शर्तों पर बाइबल जो कुछ कहती है, विचार करें।

दूसरा, मैं आपको *महसूस करवाना* चाहता हूं कि विशेषकर आप को बेचैन करना चाहता हूं। शायद मैं आपको कलीसिया से घर में इसलिए नहीं रख सकता क्योंकि उसमें आपकी संगति है। परन्तु यदि ऐसा करने से आप बेचैन होने लगें, तो यह सही दिशा में एक कदम होगा। शायद मैं आपको रविवार शाम की आराधना सेवा में जाना आरम्भ नहीं करवा सकता; परन्तु यदि आप घर रहकर बेचैन महसूस करने लगें तो अच्छा है। शायद आप को बेचैन महसूस करना आवश्यक है: आखिर आप को यह विचार कहां से मिला कि प्रभु उसकी इच्छा पूरी न करने के कमज़ोर बहाने मान लेता है। और अधिक स्पष्ट करें तो आपको यह विचार कहां से मिला कि आप बिना कोई बहाना बताए उस की इच्छा मानने से इनकार कर सकते हैं ?

तीसरा, मुझे उम्मीद है कि मैं आपसे *काम करवा* सकता हूं। शायद आपको अपने तरीके बदलने की आवश्यकता है। आप बिल्कुल छोटी बात से आरम्भ कर सकते हैं–जैसे मान लो कि अब से आप यह निश्चित कर लेते हैं कि हर बुधवार रात की आराधना सेवा में जाना ही जाना है। या शायद आप को पूरा गोलचक्र घूम के आने की आवश्यकता है। शायद आप को अपनी उदासीनता, नीम गर्म होने, अविश्वासी ढंगों के लिए प्रभु की ओर लौटना और नये समर्पण के साथ फिर आरम्भ करना और मसीह के प्रति नये समर्पण की आवश्यकता है।

इस समय पर अपनी मसीहियत पर विचार करें। क्या यह उस धनवान जवान हाकिम के धर्म जैसी है ? या यह ''क्रांतिक'' मसीहियत है।